मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -4 | अंक - 9 | जयपुर | अप्रैल - जून 2019 | पृष्ठ संख्या - 1

निदेशक की कलम से...

आचार्य (डॉ.) उदय कुमार आर. यारागट्टी
निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान देश के शीर्षस्थ तकनीकी संस्थानों में से एक है। यहाँ अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का समाज में एक विशिष्ठ स्थान है। उनका समाज में ये स्थान बना रहे उसके लिए आवश्यक है कि वे अपने भीतर कुछ विशेष गुणों को समाहित करें।

1. उन्हें अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये। 2. उन्हें अपने शोध और शिक्षा की गतिविधियों में नवीन तकनीकी को प्रयोग में लाना चाहिए। 3. विद्यार्थी अपने कार्यों को तब ही मूर्त रूप दे सकते हैं जब वे अपने कार्य पूरे जोश और जुनून से करें। 4. उनके मन में जिज्ञासा के भाव होने आवश्यक है। एक जिज्ञासू मन और सोच का दृष्टिकोण सदा ही सकारात्मक परिणाम देता है। 5. उनको अपने कार्यों को करने की दक्षता, संकल्प और स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना चाहिये। 6. शोधकार्यों को सम्पन्न करने के लिए एक संगठन, समूह में कार्य करने और समन्वयित प्रयासों की आवश्यकता होती है। अतः इन सभी गुणों की अपनाने का सतत् प्रयास किया जाना चाहिये।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में अपने कार्यों को किये जाने में दृढ़ संकल्प और ईमानदारी का विशेष महत्व है। विद्यार्थी जीवन में लक्ष्य की ओर बढ़ते कदम तब ही संभव है जब उनके प्रयासों और दिनचर्या में सहजता और ईमानदारी का समावेश हो। हमारी शिक्षा प्रणाली पुरातन काल से ही ऐसी रही है जिसमें मन की ग्रंथियों को खोलने और सत्य को खोजने की क्षमता है।

एक ग्रीक दार्शनिक का यह कथन है कि ''केवल शिक्षित ही स्वतंत्र है'' इस कथन का संदेश यह है कि शिक्षित की सोच प्रत्येक दिशा में अपनी सोच विकसित करके समसामायिक परिस्थितियों को ऊंचा उठा सकती है।

आप विद्यार्थियों में भी यही क्षमता है अतः आपको इसका भान होना चाहिये। आपको अपने स्वभाव में गम्भीरता और धैर्यता जैसी क्षमताओं को भी स्थान देना चाहिये आपकी विचारधारा और सोच में संस्थान की प्रगति और उत्थान के संकल्प भी होने चाहिये। आपके सतत् प्रयास ही आपको व संस्थान को समाज में एक विशिष्ठ स्थान दिला सकते हैं। अतः जो कार्य भी करें अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझ कर करें, सबके हित में करें।

आचार्य (डॉ.) उदय कुमार आर. यारागट्टी

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व

''भारत की एकता का मुख्य आधार है एक संस्कृति, जिसका उत्साह कभी ना टूटा। यही इसकी विशेषता है''

एक अनमोल शख्सियत

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय

मालवीय जी चाहते थे कि वैज्ञानिक ढंग की शिक्षा अपने देश में भी चालू की जाय, और प्रयोगशाला तथा कार्यशाला में विद्यार्थियों को अपने हाथों के प्रयोग का अभ्यास कराया जाय। उनके ज्ञान को प्रयोगात्मक और व्यावहारिक बनाया जाय। उनमें प्रेक्षण की शक्ति पैदा की जाय। उनके ज्ञान को यथातथ्य तथा जीवनोपयोगी बनाया जाय। उनकी धारणा थी कि भारत अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करने में तब तक सर्वथा असमर्थ है, जब तक वह वर्तमान वैज्ञानिक अन्वेषण का अध्ययन नियमित और अनिवार्य नहीं बनाता। वे चाहते थे कि प्रारम्भिक विज्ञान की शिक्षा को प्राथमिक शिक्षा पद्धति का अनिवार्य अंग बना दिया जाय, तथा माध्यमिक शिक्षालयों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में विज्ञान और वैज्ञानिक शिल्पविद्या की उच्चस्तरीय शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किया जाय ताकि हमारा देश बौद्धिक विकास तथा त्यावसायिक उन्नति में दूसरे प्रगतिशील देशों के समकक्ष बन सके। मालवीयजी चाहते थे कि प्रत्येक जिले या कम से कम प्रत्येक कमिशनरी में ऐसी माध्यमिक स्तर की औद्योगिक शिक्षा संस्थाएँ खोली जायें जिनमें बुनाई, रंगाई, धुलाई, वस्त्र छपाई, लोहारी, बढ़ईगिरी, मीनाकारी आदि की शिक्षा का प्रबन्ध हो। इन संस्थाओं में फोरमैन और उनके सहायकों के प्रशिक्षण का भी प्रबन्धक हो। वे यह भी चाहते थे।

शेष पृष्ठ 3 पर...

सम्पादकीय...

प्रिय पाठकों,

''निजभाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल''

इस अंक के माध्यम से संस्थान की ओर से सभी को हिंदी में अपनी रचनायें अधिक से अधिक भेजकर हिन्दी भाषा के प्रति अपने जुड़ाव प्रदर्शित करने के लिए बहुत-बहुत साधुवाद।

इस अंक के लिये संस्थान सदस्यों की ओर से हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आपके विचार जानने का मौका मिला, पर कुछ तकनीकी विवशताओं की वजह से अपने प्रबुद्ध व विकासशील सभी पाठकों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को स्थान नहीं दे पाये हैं, पर अलगे अंक में उन सभी विचारों व कृतियों का समावेश करने का पूरा पूरा प्रयास करेंगे। कहा गया है विचार पाँच प्रकार के होते हैं : व्यर्थ, नकारात्मक, सकारात्मक, आवश्यक एवं उच्च स्तरीय। पहले दो विचार मस्तिष्क में तुरंत व स्वतः आते हैं जिनके कारण हम नाराजगी, अवसाद, नफरत एवं डर से घिर जाते हैं तथा जो हमारे मन को नकारात्मकता की चादर से ढक लेते हैं। पूर्णतः व्यर्थ व नकारात्मक सोच हमारी मानसिक शांति को भंग करते हैं, जिसके अभाव में हम मन को सही दिशा नहीं दे पाते हैं पर इससे बाहर निकलने के लिये हमारे पास कई रास्ते हैं यथा,

1. पहला रास्ता जो हो सकता है सब के लिये संभव नहीं हो, पर कोशिश की जा सकती है कि जैसे ही नकारात्मक या व्यर्थ विचार आयें जो आपको असहज बनाने लगें तो तुरंत अपने विचारों को विराम दें और बुद्धि का इस्तेमाल करें कि ऐसी परिस्थिति में क्या किया जा सकता है। 2. अगर पहला रास्ता न अपना सकें तो विचारों की दिशा बदल दें, किसी दूसरे विषय पर विचारों को केन्द्रित करें जो सकारात्मक हो। 3. इस तथ्य का ध्यान करें कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं, एवं ईश्वर को ऐसे समय में याद करें। उनसे 'श्रीमत' मांगे। 4. दूसरों की गलतियों या अवगुणों के बजाय उनके सद्गुणों पर ध्यान केन्द्रित करें। 5. अंत में उस समय क्षणों के लिये 'ध्यान योग' करें, मन को विचार शून्य स्थिति में लाये। बेहतर परिणाम के लिये हर एक घंटे के बाद कुछ क्षणों तक मन को विचार शून्य कर दें या 'परमात्मा' पर केन्द्रित करें। मन को आराम दें तो मन की शांति बरकरार रहेगी और ऐसी मन स्थिति में आपके द्वारा किया गया हर कार्य, बेहतरीन होगा। हम सबके जीवन में सुख, शांति बनी रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

सस्नेह एवं आदर सहित,

भवदीया,

डॉ. ज्योति जोशी
सम्पादक एवं आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर
9413971604, 9549654852, 0141-2713350, jojo_jaipur@yahoo.com
malaviyaprakash.lokmat@gmail.com | jjoshi.chy@mnit.ac.in

जीवन का सच्चा लक्ष्य

लक्ष्यहीन जीवन सागर की सतह पर तैरती उस नाव के समान होता है जिसका कोई मांझी नहीं होता, जिसकी न तो कोई अपनी गति होती है और न ही कोई अपनी दिशा। ऐसा जीवन उस नाव के समान होता है जो पवन के झोंकों और लहरों के थपेड़ों से इधर से उधर भटकती रहती है और अंततः काल के महासागर में डूब जाती है।

सार्थक और सफल जीवन के लिए हमारे जीवन का एक निश्चित लक्ष्य होना चाहिए। जीवन का लक्ष्य न केवल हमारे जीवन को दिशा प्रदान करता है अपितु उसे सार्थकता और महानता भी प्रदान करता है। हमारा लक्ष्य जितना ऊँचा होगा हमारा जीवन भी उतना ही भव्य और गौरवशाली होगा।

परंतु हम अपने जीवन के लक्ष्य का चुनाव कैसे करें?

भौतिकवाद पर आधारित जीवन का लक्ष्य :

भौतिकवाद पर आस्था रखने वाला मनुष्य अपने को शेष सभी जीवों से अलग मानता है। वह अपनी सत्ता के विस्तार को केवल अपनी देह, प्राण और मन की उन सीमाओं तक ही सीमित मानता है जिनके प्रति वह सचेतन है।

वह नहीं जानता कि वह अखिल ब्रह्माण्ड का एक अभिन्न अंश है। अतः वह अपनी सीमित सत्ता में संतुष्ट रहते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन कामनाओं की पूर्ति के लिए लगा देता है। अपने चारों और उपस्थित मनुष्यों से अपने को भिन्न मानते हुए वह उनसे प्रतिस्पर्धा करता है। उसके जीवन की सफलता का केवल एक मापदण्ड होता है कि उसका और उसके परिवार का जीवन कितने सुख से बीत रहा है और वह अपने सम्बन्धियों, मित्रों और साथी मनुष्यों की अपेक्षा कितना समृद्ध सशक्त और सम्मानीय है।

आज जब हम अपने चारों ओर देखते हैं कि लगभग सभी मनुष्यों का केवल यही एक लक्ष्य होता है। यदि हम तटस्थ भाव से चिंतन करें तो समझ आएगा कि यह सर्वमान्य लक्ष्य कितना खोखला है।

मृत्यु पर विजय पाने की अपेक्षा मृत्यु से पराजय स्वीकार कर हमने मृत्यु को अपनी नियति मान लिया है। जब कि गीता मनुष्य की अमरता की घोषणा करती है- ''अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो...''।

पुनर्जन्म के समर्थन में प्रमाणों के अभाव को हमने साक्ष्य मान लिया है। प्रयासों से थक कर संदेह को सत्य मान लिया है और पुनर्जन्म के सिद्धान्त को नकार दिया है। जब कि गीता स्पष्ट रूप से पुनर्जन्म की घोषणा करती है - ''देहिनोऽस्मिन्यथा देहे''

हृदय में स्थित अपनी आत्मा और उसकी अमरता, सार्वभौमिकता और एकात्मता के प्रति अनजान हमने अपनी सत्ता के अत्यधिक छोटे और प्रत्यक्ष अंश को अपना विस्तार मान लिया है। जब कि उपनिषद् घोषणा करते है - ''अहम् ब्रह्मास्मि''।

ये मान्यताऐं न तो तर्क संगत है और न ही किसी वैज्ञानिक विश्लेषण का निष्कर्ष। ये हमारी अज्ञानता और दुर्बलता का परिचायक है। फिर भी इन मान्यताओं को आधार मानकर 'जन्म प्रति जन्म परम सत्य की ओर आरोहण' के महान लक्ष्य की अपेक्षा अपनी सीमित और नश्वर भौतिक सत्ता की रक्षा और इस जीवन के सुखपूर्ण व्यय को ही हमने अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ ध्येय मान लिया है।

कहीं अज्ञानवश हम अपने बहुमूल्य जीवन को व्यर्थ ही तो नहीं गवाँ रहे है।

आत्मज्ञान पर आधारित जीवन का सच्चा लक्ष्य :

जब तक मनुष्य यह नहीं जान लेता कि (1) सृष्टि की उत्पत्ति के पीछे भगवान् का क्या उद्देश्य है, (2) युगों युगों से प्रकृति के घोर श्रम के पश्चात् मनुष्य के जन्म का क्या रहस्य है और (3) आदि काल से चल रहे इस यज्ञ में मनुष्य से किस आहूति की अपेक्षा की जा रही है, तब तक मनुष्य जीवन के लिए भी लक्ष्य निर्धारित करना अर्थहीन है।

सर्वप्रथम हमें इन प्रश्नों का हल खोजना होगा। ज्ञान प्राप्त करने के लिए मनुष्य के पास जो साधन सुलभ है, वे हैं उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ, तर्क शक्ति और विज्ञान। ये साधन हमें आंशिक प्रकाश तो देते हैं, अंधकार को कुद कम कर देते हैं, कुछ दूर तक हमारे पथ को प्रकाशित भी करते हैं परंतु ये हमारे गूढ़ प्रश्नो का समाधान करने में असमर्थ हैं।

शेष पृष्ठ 5 पर...

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या
निदेशक की कलम से...	1
महामना पं. मदन मोहन मालवीय एक ...	1
सम्पादकीय	1
जीवन का सच्चा लक्ष्य	1
दिल को छू लेने वाली कुछ पंक्तियाँ	2
ये तो एक बहाना है	2
कुछ नज्मों ने खाली तकते	2
प्रसंग-सफलता के रास्ते तभी खुलते हैं....	2
जब घनघोर घटाए आती हैं	2
व्यापक संसार अन्तस्थ में छिपाये बैठे होते हैं पिता	2
जीवन का उद्देश्य	2
यह हवा वो नहीं	3
झुलसी हुई देह	3
मिट्टी की जती	3
पार्वती	4
जीवन एवं गीता	4
माँ	4
मैं उड़ना चाहता हूँ	4
भावुक है वो	4
शुभ समाचार	4
तेरा चेहरा	4
आज ईश्वर को पास पाया है	4
वक्त	4
बेटी	5
हू हू करती ये अनिल	5
अनकहा इज़हार	5
फास्ट फूड या स्वास्थ्य की सुरक्षा?	5
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान	6
आम लोग	6
मंजिल	6
फिर भी क्यों हार जाते हैं हम?	6
रेगिस्तान आँखें	6

दिल को छू लेने वाली कुछ पंक्तियाँ

1. काबिल लोग न तो किसी को दबाते हैं और न ही किसी से दबते हैं।
2. जमाना भी अजीब है, नाकामयाब लोगों का मजाक उड़ाता है और कामयाब लोगों से जलता है।
3. कैसी विडंबना है। कुछ लोग जीते जी मर जाते हैं, और कुछ लोग मर कर भी अमर हो जाते हैं।
4. इज्जत किसी आदमी की नहीं जरूरत की होती है, जरूरत खत्म तो इज्जत खत्म।
5. सच्चा चाहने वाला आपसे प्रत्येक तरह की बात करेगा। आपसे हर मसले पर बात करेगा लेकिन धोखा देने वाला सिर्फ प्यार भरी बात करेगा।
6. हर किसी को दिल में उतनी ही जगह दो जितनी वो देता है वरना या तो खुद रोओगे, या वो तुम्हें रूलाऐगा।
7. खुश रहो लेकिन कभी संतुष्ट मत रहो।
8. अगर जिंदगी में सफल होना हैं तो पैसों को हमेशा जेब में रखना, दिमाग में नहीं।
9. इंसान अपनी कमाई के हिसाब से नहीं, अपनी जरूरत के हिसाब से गरीब होता है।
10. जब तक तुम्हारे पास पैसा है, दुनिया पूछेगी भाई तू कैसा है।
11. हर मित्रता के पीछे कोई न कोई स्वार्थ छिपा होता हैं ऐसा कोई भी मित्रता नहीं जिसके पीछे स्वार्थ न छिपा हो।
12. दुनिया में सबसे ज्यादा सपने तोड़े हैं इस बात ने कि लोग क्या कहेंगे।
13. जब लोग अनपढ़ थे तो परिवार एक हुआ करते थे, मैंने टूटे परिवारों में अक्सर पढ़े लिखे लोग देखे हैं।
14. जन्मों जन्मों से टूटे रिश्ते भी जुड़ जाते हैं बस सामने वाले को आपसे काम पड़ना चाहिए।
15. हर प्रॉब्लम के दो सोल्युशन होते है।

भाग लो - पसंद आपको ही करना है

16. इस तरह से अपना व्यवहार रखना चाहिए कि अगर कोई तुम्हारे बारे में बुरा भी कहे तो कोई भी उस पर विश्वास न करे।
17. अपनी सफलता का रौब माता पिता को मत दिखाओ, उन्होंने अपनी जिंदगी हार के आपको जिताया है।
18. यदि जीवन में लोकप्रिय होना हो तो सबसे ज्यादा आप शब्द का उसके बाद हम शब्द का और सबसे कम मैं शब्द का उपयोग करना चाहिए।
19. इस दुनिया में कोई किसी का हम दर्द नहीं होता, लाश को शमशान में रखकर अपने लोग ही पूछते हैं और कितना वक्त लगेगा।
20. दुनिया के दो असम्भव काम माँ की ममता और पिता की क्षमता का अंदाजा लगा पाना।
21. कितना कुछ जानता होगा वो शख्स मेरे बारे में जो मेरे मुस्कराने पर भी जिसने पूछ लिया कि तुम उदास क्यों हो।
22. यदि कोई व्यक्ति आपको गुस्सा दिलाने में सफल रहता है तो समझ लीजिये आप उसके हाथ की कठपुतली है।
23. मन में जो हैं साफ-साफ कह देना चाहिए कि सच बोलने से फैसलें होते हैं और झूठ बोलने से फासलें।
24. यदि कोई तुम्हें नजर अंदाज कर दे तो बुरा मत मानना कि लोग अक्सर हैसियत से बाहर मंहगी चीज को नजरअदांज कर ही देते हैं।
25. संस्कारों से भरी कोई धन दौलत नहीं है।
26. गलती कबूल करने और गुनाह छोड़ने में कभी देर ना करना, क्योंकि सफर जितना लंबा होगा वापसी उतनी ही मुश्किल हो जाती है।
27. दुनिया में सिर्फ माँ-बाप ही ऐसे हैं जो बिना स्वार्थ के प्यार करते हैं।
28. कोई देख ना सका उसकी बेबसी जो सांसें बेच रहा हैं गुब्बारों में डालकर।
29. घर आये हुए अतिथि का कभी अपमान मतकरना, क्योंकि अपमान तुम उसका करोगे और तुम्हारा अपमान समाज करेगा।
30. जो भाग्य में है वह भाग कर आयेगा और जो भाग्य में नहीं है वह आकर भी भाग जायेगा।
31. हँसते रहो तो दुनिया साथ है, वरना आँसुओं को तो आँखों में भी जगह नहीं मिलती।
32. दुनिया में भगवान का संतुलन कितना अद्भूत है, 100 कि. ग्रा. अनाज का बोरा जो उठा सकता हैं वो खरीद नहीं कसता और जो खरीद सकता है वो उठा नहीं सकता।
33. जब आप गुस्सें में हो तब कोई फैसला न लेना और जब आप खुश हो तब कोई वादा न करना (ये याद रखना कभी नीचा नहीं देखना पड़ेगा।)
34. मैंने कई अपनों को वास्तविक जीवन में शतरंज खेलते देखा है।
35. जिनमें संस्कारों और आचरण की कमी होती हैं वही लोग दूसरे को अपने घर बुला कर नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं।
36. मुझे कौन याद करेगा इस भरी दुनिया में, हे ईश्वर बिना मतलब के तो लोग तुझे भी याद नहीं करते।
37. अगर आप किसी को धोखा देने में कामयाब हो जाते हैं तो मान कर चलना की ऊपर वाला भी आपको धोखा देगा क्योंकि उसके यहाँ हर बात का इन्साफ जरूर होता है। - **सुमित भारती,** द्वितीय वर्ष हिन्दी इलेनट्रोनियम एवं संचार अभियांत्रिकी

ये तो एक बहाना है

ये तो बस एक बहाना है,
राही तुझे कहीं और जाना है।
मंजिल की चिंता छोड़ अभी, उठा लुत्फ
उस पार मौसम बड़ा सुहाना है।
तू गा, झूमता चल मस्ती में
जिंदगी का सफर ये सूफियाना हैं।
आज मिल-बैठे है, एक ही डाल पर
कल फिर घोसलों में उड़ जाना है।
आ मिलकर गा ले एक गीत,
बाँटे दिलों का दर्द
फिर तुझे इस राह तो मुझे उस राह जाना है।
पल दो पल का मत समझ ये साथ,
साथ ये तुझे उम्रभर निभाना है।
परवाह न कर इस दुनिया की तू,
इसका हर अन्दाज पुराना है।
तेरे मेरे का अफसोस न कर तू
यही सब छोड़ तुझे, अकेला जाना है।
बटोर ले कुछ मीठी यादें सफर के लिये
फिर बस याद कर उन्हें मुस्कुराना है।
रुक मत तू, बस कदम तो बढ़ा
पग-पग पर तेरा अशियाना है।
कुछ कांटे भी मिलेंगे राह में,
पर फूल समझ उन्हें, आगे बढ़ जाना है।
राह में मिलेंगे लोग बहुत,
कुछ भटक जायेंगे, कुछ थक जायेंगे
पर तुझे हर हाल में मंजिल पाना है।
अपनों से जुदा कर ना दिल की राहे,
हर अजनबी को भी अपना बनाना है।
कर कुछ ऐसा कीर्तिमान,
छोड पदचिन्हों के निशान
फिर तुझे हर दिल की राह से गुजर जाना है।
ये तो बस एक बहाना है .....

- दीपक कुमार
अंतिम वर्ष, अभियांत्रिकी विभाग

प्रसंग-सफलता के रास्ते तभी खुलते है जब हम उसके करीब पहुँच जाते है

(संकलन)

ये प्रसंग महान वैज्ञानिक थॉमस एडिसनके बारे मैं है। कहा जाता है कि वह बहुत ही मेहनती एंव जुझारू प्रवृति के व्यक्ति थे। बचपन में उन्हें यह कहकर स्कूल से निकाल दिया गयाथा कि वह मंद बुद्धि बालक हैकिन्तु बाद में उन्ही थॉमस एडिसन ने कई महत्वपूर्ण आविष्कार किये जिसमें से ''बिजली का बल्ब'' प्रमुख है। उन्होंने बल्ब का आविष्कार करने के लिए हजारों बार प्रयोग किये थे तब जाकर उन्हें सफलता मिली थी।

एक बार जब वह बल्ब बनाने के लिए प्रयोग कर रहे थे तभी एक व्यक्ति ने उनसे पूछा आपने करीब एक हजार प्रयोग किये लेकिन आपके सारे प्रयोग असफल रहे और आपकी मेहनत बेकार हो गई। क्या आपको दुःख नहीं होता?

एडिसन ने कहा मै नहीं समझता कि मेरे एक हजार प्रयोग असफल हुए है। मेरी मेहनत बेकार नहीं गयी क्योंकि मैंने एक हजार प्रयोग करके यह पता लगाया है कि इन एक हजार तरीकों से बल्ब नहीं बनाया जा सकता। मेरा हर प्रयोग, बल्ब बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा है और मैं अपने प्रत्येक प्रयास के साथ एक कदम आगे बढ़ता हूँ।

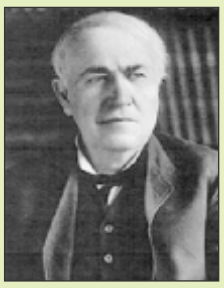

कोई भी सामान्य व्यक्ति होता तो वह जल्द ही हार मान लेता लेकिन थॉमस एडिसन ने अपने प्रयास जारी रखे और हार नहीं मानी। आखिरकार एडिसन की मेहनत रंग लायी और उन्होंने बल्ब का आविष्कार करके पूरी दुनिया को रोशन कर दिया।

यह थॉमस एडिसन का विश्वास ही था जिसने आशा की किरण को बुझने नहीं दिया नहीं और पूरी दुनिया को बल्ब के द्वारा रोशन कर दिया।

मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। यह विश्वास ही हमें आगे बढ़ने एंव निरंतर प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है। हमारा हर प्रयास हमें एक कदम आगे बढ़ाता है और हम जैसे जैसे आगे बढ़ते है वैसे वैसे हमारे लिए सफलता के रास्ते खुलते जाते है।

-प्रफुल्ल प्रिय आर्य, द्वितीय वर्ष, प्रौद्योगिकी विभाग

कुछ नज्मों ने खाली तकते

कुछ नज्मों ने खाली तकते,
होठों पे इक बात रखी है।
कुछ धुंधले, मैले, किस्सों ने,
हजारों यादें साथ रखी है।।
दीवारों पे टंगे बुढे पीले कागज,
हाँ, अब भी तेरी याद दिलाते है।
मैं कभी उनके पास नहीं जाता,
इशारों में वो ही मुझे बुलाते हैं।
दीवारों से छनती आती आवाजें,
कुछ बेतहाशा शौर मचाती थी।
क्या सुना था तुमने जब मेरी आंखें,
सीढ़ियों पे बैठ गजलें गाती थी।
सच्च कहुं मैंने तुम्हारी,
सारी की सारी सौगत रखी है।
कुछ नज्मों ने .....।
कुछ धुंधले .....।।
जब तेरी दहलीज देखी,
जमाने से नावाकिफ था थोड़ा।
कुछ खुद से सिखा जीना,
मिला शउर तुमसे भी थोड़ा।
दोस्तों की दोस्ती याद है,
और उन खुदगर्जों की खुदगर्जी।
सब कुछ मैं नहीं लिख सका।
तुम लिखों बाकी तुम्हारी मर्जी।
बस कुछ कहानियाँ लिखी है।
कुछ सच्ची, कुछ झूठ रखी है।
कुछ नज्मों ने खाली तकते,
होठों पे इक बात रखी है।
कुछ धुंधले, मैले, किस्सों ने,
हजारों यादें साथ रखी है।।

- अंकित पुलकित 'असरार'
तृतीय वर्ष, एम. टेक, संगणक विज्ञान एवं आभियात्रिकी

जब घनघौर घटाए आती है

जब घन-घौर घटाए आती है।
कुछ बुन्दे बारिश की लाती है।
मैं उसमें ही खुश हो लेती हूँ।
फिर तुम मुझको राजमहल क्यूं देना चाहते हो।
आखिर तुम मुझसे क्या चाहते हो।।
जब मैं छोटी थी, तुतलाती थी।
लेने तुझको राजकुमार आएगा, अम्मा कहती थी।
अब जो तुम आए तो सवाल ये उठता है।
आखिर तुम मुझसे क्या चाहते हो।।
मैं ठहरी गांव के इस पखवाड़े की।
तुम शान हो दूर दराज रजवाड़े की।
मुझको भरके बाहों में, मकानों को,
क्युं महलों का दर्जा देना चाहते हो।
आखिर तुम मुझसे क्या चाहते हो।
जानती हूँ चाहते हो मुझे,
सोचूंगी रातभर बैठ किसी छौर को।
तुम कहो, मिलने आओ, किस भोर को।
जवाब सब है, फिर भी दिल पूछता है।
आखिर तुम मुझसे क्या चाहते हो।

- अंकित पुलकित, संगणक

जीवन का उद्देश्य

हम अपनी जरूरतों के पीछे भागते और उनको पूरा करने की चाहत में कितना आगे निकल गए। हमने तो अपने उन पलों को बिसार दिया जिनमें महबूब सी जिंदगी हुआ करती थी। इस जरूरत की होड़ ने न जाने कितना कुछ हमसे छीन लिया और यह सब निरंतर जारी ळै। हम इंसान ने इसे अपने सीने से कुछ इस तरह से लगा रखा है मानो यही हमारे जीने की एक आखिरी उम्मीद है। हमारी जरूरतों ने हमें भौतिक एवं मानसिक रूप से अपना दास बना लिया है। मजे की बात ये है कि पल प्रतिपल हम इसके भँवर में फंसते चले जा रहै है और हमें इस बात का इल्म भी नहीं।

हमें अपनी जरूरतों का समय एवं सीमा दोनों तय कर देना चाहिये क्योंकि अगर ऐसा न हुआ तो यह हमें जिस स्थिति में लाकर खड़ा कर देगा उसका हम अनुमान भी नहीं लगा सकते। यह हमें मजबूत भी बना सकता है। और मजबूर भी। यह एक जुए की भाँति है यह हमें रंक से राजा भी बना सकती है व इसके विपरीत भी। जरूरतों की कोई सीमा नहीं है। यह एक कभी न खत्म होने वाली ऐसी राह है जिसमें मनुष्य चलते चलते अपना सब कुछ दाँव पर लगा देता है, हम ज्यों ज्यों इस रास्ते में अपने कदम बढ़ातें हैं तो बस एक कदम और आगे चलने की चाहत जाग उठती है। यह होना स्वभाविक भी है क्योंकि यही हमारे अस्थिर मन की प्रकृति है।

हमने कितनी बार यह महसूस किया होगा कि एक जरूरत पूरी होने को होती है वैसे ही ठीक अगले पल एक दूसरी जरूरत हमारे मन में जाग उठती है और यह क्रम सतत चलता रहता है। जरूरत की तो हमेशा से यही फितरत रही कि आज इस पल कुछ और अगले ही पल कुछ और। हम लगभग पूरी तरह से इसकी गिरफ्त में होते चले जाते है। शायद हम यह भुला देते हैं कि हमारा जन्म हमारी इच्छा से नहीं हुआ और ना ही हमसे पूछकर हमारी मौत आयेगी। यहाँ पर हमें यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि हम पर हमारा कोई जोर या नियंत्रण नहीं है। इसलिये हमें हर एक पल में खुद के जीने का एक बेहतर कारण ढूँढना चाहिए और उसके साथ रहना और उस पल को जी कर उसके लिए ईश्वर का धन्यवाद करते रहना चाहिए।

- अंकुर गुप्ता, शोधर्थी रसायन शास्त्र विभाग

व्यापक संसार अन्तस्थ में छिपाये बैठे होते हैं पिता

उस चरमराती खाट पर, चेहरे पर अनुभवों की पैनी धार से तराशी हुई झुर्रियों और बदन की मुसीबतों की आँधियों से जाती हुई रौनक जब पिताजी में दिखाई दे तो बचपन से आज तक का हर लम्हा चलचित्र की तरह नजर आने लगता है।

पिताजी हर दुःख भाँप लेते थे बच्चों की हर मांग पूरी करने को अपने हर सुख लुटा देते थे। हर दिन निकल पड़ते थे दो प्याज, थोड़ा अचार और माँ के हाथों से बनी चार रोटी गांठ में बांध कर हमारी खुशियाँ और जरूरतें बटोरने और इस दौर में जब उस चरमराती खाट पर पिता हमसे अपने उन्हें पकाड कहकर समय बर्बाद करने का जिम्मेदार ठहराने लग जाते हैं।

उनकी हर बातें हरकारा समझ टाल दी जाती है।

जिस पिता ने संतान की क जिद को पूरा करने में अपनी जिंदगी के कई सपनों को लुटा दिया। आज वही पिता एक छोटी सी चाहत के काबिल नहीं रहा वो समझते भी सब कुछ हैं थ्याकंकि उनके पास वो अनुभव है जो उन्होंने परिस्थतियों के दौर में लिये और वो प्यार करवाना भी जानते हैं नाराज होना और इतनी उपेक्षा के बाद भी हमसे प्यार उतना ही करते हैं जितना बचपन से किया। ये उनकी मजबूरी या कमजोरी नहीं बल्कि अपने बच्चों के खातिर सर्वस्व पिता कभी निःश्वास जरूर लेते हैं मगर अपनी जिंदगी की दौड़ में आज भी वो हारते नहीं बल्कि छाया देते हैं। विशालकाय वृक्ष की तरह जर्जर होने तक। ना उन्होंने जिंदगी में हारना सीखा और न अपने बच्चों को हारते हुए देखना चाहा बस यही सपना पूरा करना उनकी जिंदगी का असली मकसद रहता है और आँखों में एक पिता बनने का सही अर्थ देख लेते हैं उस दिन वो हमसे मोह छोड़ बिना कुछ कहे हमारी आँखों से ओझल होते नजर आते हैं।

नेमीचंद मावरी
शोधार्थी, रसायन शास्त्र विभाग

पृष्ठ 1 का शेष .....

मदन मोहन मालवीय

कि प्रत्येक प्रान्त में एक उच्चस्तरीय औद्योगिक शिक्षा महाविद्यालय खोला जाय, जिसमें शिल्पविज्ञान सम्बन्धी विषयों की उच्चस्तरीय शिक्षा दी जाय।

मालवीयजी जापान की कृषि शिक्षा की व्यवस्था के बहुत प्रशंसक थे। उनका कहना था कि जापान में कई सौ कृषि स्कूल हैं जिनमें प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों को खेती की प्रारम्भिक शिक्षा दी जाती हे, और बहुत सी माध्यमिक कृषि शिक्षा संस्थाएं हैं जिनमें भावी कृषकों को कृषि सम्बन्धी वैज्ञानिक और व्यावहारिक शिक्षा दी जाती है। मालवीयजी चाहते थे कि इस प्रकार के कृषि स्कूल और माध्यमिक कृषि शिक्षा संस्थाएं काफी संख्या में सारे देश में खोली जायें। वे यह भी चाहते थे कि प्रत्येक प्रान्त में टोकियो के कृषि महाविद्यालय की तरह के महाविद्यालय खोले जायें जिनमें योग्य विद्यार्थियों को कृषि विज्ञान की उच्चस्तरीय शिक्षा दी जाय, बड़े पैमाने पर खेती से सम्बन्धित समस्याओं पर अनुसंधान किया जाय, तथा कृषि शिक्षक तैयार किये जायें। वे चाहते थे कि ये कृषि महाविद्यालय विश्वविद्यालयों से सम्बन्धित हों, और कृषि विशेषज्ञ और दूसरे विधान विशेषज्ञ मिलकर काम करें।

मालवीयजी यह भी चाहते थे कि सरकार की ओर से आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और आयुर्वेद दोनों की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध हो, और आयुर्वेदिक औषधियों का वैज्ञानिक परिक्षण कर उनका सदुपयोग किया जाय।

अन्य देशी भाषाओं के साथ-साथ संस्कृत भाषा का समुचित अध्ययन, अध्यापन भी वे आवश्यक समझते थे। उनका कहना था कि संस्कृत भाषा संसार की समस्त भाषाओं में सर्वोत्कृष्ट है, तथा मनुष्य के उच्चातिउच्च विचारों को सुन्दर तथा सुचारू रूप से प्रगट करने के लिये सर्वथा उपयुक्त है। वह हमारी अधिकांश देशी भाषाओं की जननी है, और उसके द्वारा ही देशी भाषाएँ परिपुष्ट और समृद्ध की जा सकती है, भारतीय संस्कृति, सभ्यता और धर्म की समुचित जानकारी के लिए संस्कृत साहित्य का अध्ययन आवश्यक है।

हिन्दू के लिये तो यह अनिवार्य है। मालवीय जी चाहते थे कि संस्कृत भाषा के अध्ययन का क्रम इतना विस्तृत कर दिया जाय कि शिक्षार्थी उसके द्वारा जाति के चरित्र को उच्च बना सकें। राष्ट्र के मानसिक विकास में सहयोग दे सकें, तथा समाजसेवा आदि कर्तव्यों को अत्यन्त सुगमता पूर्वक कर सकें ताकि संस्कृत देश के सब भागों के पठित समाज की फिर वैसी ही भाषा बन जाय जैसी वह प्राचीन समय में थी।

मालवीय जी चाहते थे कि 'सब प्रान्तों में अपने अपने प्रान्त की भाषा की उन्नति हो। सभी भाषाएं शोभा के साथ प्रौढ़ और दृढ़ बने' पर हिन्दी भाषा राष्ट्रीय भाषा के तौर पर उपयुक्त की जाए। सब भाई बहिन राष्ट्रीय भाषा के गौरव को मान कर अपनी भाषा के साथ प्रत्येक बालक को हिन्दी का ज्ञान अवश्य करावें।

मालवीय जी का कहना था कि ''साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है। जनता का राजकाज जनता की भाषा में ही सुचारु रूप से चल सकता है। जनभाषा ही लोकतन्त्र की भाषा हो सकती है। उस भाषा में ही जनसाधारण ठीक तौर पर ज्ञान प्राप्त कर सकते है, अपने विचार और भाव व्यक्त कर सकते हैं, राज के क्रियाकलापों में समुचित सक्रिय भाग ले सकते हैं। इसलिये जिस देश की जो भाषा है, उसी में उस देश के न्याय कानून, राजकाज, कौंसिल इत्यादि का कार्य होना चाहिए'' और वही भाषा शिक्षा का माध्यम होना चाहिए। अतः मालवीयजी के विचार में हमें केवल स्कूलों में ही नहीं बल्कि विश्वविद्यालयों तथा उच्च श्रेणियों में भी देशी भाषाओं के माध्यम द्वारा शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। पर उनका तो कहना था कि हमारे युवकों को विदेशी भाषाएं सीखने की आवश्यकता है और कोई विदेशी भाषा हमारे लिए उनती लाभदायक नहीं हो सकती जितनी अंग्रेजी। अतः सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी को उचित स्थान मिलना चाहिए। किन्तु अंग्रेजी दूसरी भाषा की तरह पढ़ाई जानी चाहिए, और उसके द्वारा युवकों को शिक्षा देने को व्यवस्था बदल देनी चाहिए।

जब हम किसी भाषा के विषय में कुछ कहते हैं तब हमें उस भाषा की लिपि का विचार स्वभावतः आ जाता है। मालवीय जी का विचार था कि हिन्दी भाषा रोमन या फारसी लिपि के बजाय नागरी लिपि में ही लिखी जाय। उनका कहना था भारतवासियों को अपनी भाषा विदेशी अक्षरों में लिखने को कहना वैसा ही है जैसा कि अंग्रेजों से अपनी भाषा को नागरी अक्षरों में लिखने को कहना है।

मालवीय जी सरल हिन्दी के पक्ष में थे। उनका कहना था कि हिन्दी में फारसी अरबी के बड़े बड़े शब्दों का व्यवहार जैसा बुरा है, हिन्दी को अकारण ही संस्कृत शब्दों से गूंथ देना भी वैसा ही बुरा है। जहाँ तक हो हिन्दी में हिन्दी ही रखी जाय। अनावश्यक शब्दों को हिन्दी से अलग कीजिये। उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं के रूप गठ बन गये है। अब इन दोनों का यथासंभव एक स्थान में लाइए। इस बात के लिए यत्न करना जैसा हिन्दुओं के लिए जरूरी है वैसा ही मुसलमानों के लिए भी आवश्यक है। दोनों और से यत्न होने से हम भाषा के क्रम को बहुत कुछ एक कर सकते हैं। वे कहते थे हम स्वच्छ भाषा में हिनदी लिखें जब भाषा में शब्द न मिले तब संस्कृत से लीजिए या बनाइए हिन्दी में जो उर्दू, फारसी के शब्द आ गए है। उनका व्यवहार कीजिए। मालवीय जी 'अंग्रेजी भाषा और देशी भाषा दोनों भाषाओं के ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद कर हिन्दी साहित्य के भण्डार को भरना चाहते थे। उनका कहना था कि हमें जगह-जगह से और विभिन्न भाषाओं से अच्छे अच्छे विचारों को चुनना चाहिए।'

मालवीय जी के विचार में विश्वविद्यालयों की तुलना हम वृक्षों से कर सकते हैं जिनकी जड़ें प्रारम्भिक पाठशालाओं की गहराई तक पहुँचती है, और जो अपना रस और शक्ति द्वितीय श्रेणी के स्कूलों से ग्रहण करते है। अतः अच्छी ऊँची शिक्षा के लिए वे प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा की अच्छी व्यवस्था आवश्यक समझते थे। उनका सुझाव था कि इण्टरमीडियेट कक्षा के दो वर्ष की पढ़ाई सब हाई स्कूलों में की जाय, और बी.ए. की शिक्षा की अवधि तीन वर्ष कर दी जाय। वे विश्वविद्यालयों को विश्व की सारी विद्याओं का ऐसा उच्चस्तरीय शिक्षा केन्द्र बनाना चाहते थे कि वहाँ विभिन्न विषयों के विद्यार्थी एक साथ रहते हुए पारस्परिक सम्पर्क और विचार विमर्श द्वारा तथा विशेषज्ञों के सुबोध भाषणों द्वारा अपने विषय के अतिरिक्त अन्य विषयों का सरल ज्ञान प्राप्त करें, प्राच्य और अर्वाचीन ज्ञान का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन करें तथा विभिन्न विशेषज्ञों के सहयोग से उच्चकोटि का अनुसन्धान करें, और जहाँ सम्भव हो वहाँ प्रयोगशालाओं में अपने विचारों की सच्चाई की परख करें एवं प्रयोगात्मक ढंग से अपने ज्ञान को वास्तविक और ठोस बनायें, उन्हें व्यवहार में लाने की अपने में क्षमता पैदा करें।

मालवीयजी का अपना काशी विश्वविद्यालय एक प्रकार से उनकी अपनी कल्पना का प्रतीक था। वह प्राच्य और अर्वाचीन विद्याओं का संगम, विश्वज्ञान का विद्या मन्दिर था। वर्तमान सम्भ्यता की अनुकरणीय तथा लाभदायक बातों के साथ भारतीय सम्भ्यता का उचित सामंजस्य उसका उद्देश्य था। प्राचीन भारतीय आयुर्वेद के साथ अर्वाचीन शल्यशास्त्र की शिक्षा का मेल, आयुर्वेदिक औषधियों का वैज्ञानिक परीक्षण तथा उन पर अनुसन्धान, विभिन्न विषयों पर प्राच्य और अर्वाचीन ज्ञान का तुलनात्मक और समन्वयात्मक अध्ययन, प्राचीन भारतीय संस्कृति, दर्शनशास्त्र, साहित्य और इतिहास के गम्भीर अध्ययन अध्यापन के साथ साथ आधुनिक मनोविज्ञान, नीतिविज्ञान, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र राजनीति विज्ञान आदि का अध्ययन अध्यापन, वेद, वेदांग तथा संस्कृत साहित्य और वाङमय की शिक्षा के अतिरिक्त आधुनिक ज्ञान विज्ञान, धातुविज्ञान, खनन विज्ञान, विद्युत इंजीनियरी, यान्त्रिक इंजीनियरी, कृषि विज्ञान का अध्ययन इसकी विशेषता थी। यहाँ ईश्वरभक्ति के साथ साथ देशभक्ति की शिक्षा दी जाती थी, और विद्यार्थियों को राष्ट्र के जीवन का ज्ञान कराया जाता था, उन्हें समाज की सेवा के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। मालवीयजी की कामना थी कि उनका विश्वविद्यालय जीवन और ज्योति का केन्द्र बने, और वहाँ के विद्यार्थी ज्ञान में संसार के दूसरे प्रगतिशील देशों के विद्यार्थियों के समान हों, तथा उत्कृष्ट जीवन बिताने के योग्य बनें, देशभक्ति और भगवद्भक्ति से अपने जीवन को अनुप्राणित कर समाज की सेवा करें।

मालवीय जी अध्यापक को समाज का 'सर्वश्रेष्ठ सेवक' स्वीकार करते थे। उनकी धारणा थी कि अगर वह देशभक्त है, राष्ट्रयता से उसे प्रेम है और अगर वह अपने उत्तरदायित्व को समझता है, तो वह देशभक्त पुरुषों और स्त्रियों की जाति उत्पन्न कर सकता है, जो स्वभावतः देश को किसी ऐसी श्रेणी पर पहुँचा देंगे जहाँ राष्ट्रहित के समाने जातीय स्वार्थ और द्वेष का लेश भी नहीं रहेगा। वे चाहते थे कि अध्यापक अपने जीवन को देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता की भावना से विभूषित कर इस भूमि से अशिक्षा को हटा दें, अपने नवयुवकों में नागरिकता की शिक्षा तथा प्रेम की भावना का ऐसा विस्तार कर दे कि राष्ट्रीयता नागरिकता की शिक्षा तथा प्रेम की भावना का ऐसा विस्तार कर दें कि राष्ट्रीयता रूपी सूर्य के सामने साम्प्रदायिकता कभी टिक नहीं सके, अपने विद्यार्थियों में सद्गुणों तथा सज्ज्ञानका प्रसार करें, उनहें इस योग्य बना दें कि वे दूसरे देशों के स्नातकों से टक्कर ले सकें, उनमें इतनी क्षमता पैदा कर दें कि वे अपने देश की स्नातकों से टक्कर ले सकें, उनमें इतनी क्षमता पैदा कर दें कि वे अपने देश की शक्ति का निर्माण कर सकें, उसे समृद्ध ज्ञान सम्पन्न और गौरवान्वित कर सकें।

मालवीय जी चाहते थे कि जिस तरह प्राचीनकाल में भारत में गुरु सर्वसम्मानित था, उसी तरह अब भी सरकार, अधिकारी और विद्यार्थी गुरुओं के मान की रक्षा तथा उनके गौरव की बृद्धि अपना कर्तव्य समझें। इसके बिना शिक्षा की सुव्यवस्था असम्भव है।

मालवीय जी का विद्यार्थियों को उपदेश था

सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया।
देशभक्तघात्मत्यागेन सम्मानर्हः सदाभाव।।

अर्थात् सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, विद्या, देशभक्ति, आत्मत्याग द्वारा अपने समाज में सम्मान के योग्य बनो।

वे चाहते थे कि विद्यार्थी सदा सत्य का आचरण करें, ब्रह्मचर्य और व्यायाम द्वारा अपनी जीवन शक्ति को परिपुष्ट करें, नियमित रूप से विद्याध्यायन कर अपनी बौद्धिक शक्ति का विकास करें, अपने में अपने कुटुम्ब तथा अपने राष्ट्र की सेवा करने की क्षमता पैदा करे, सदा शुद्धता से रहें और शील का पालन करें, अपने सद्व्यवहार से अपने विद्यालय का गौरव बढ़ायें, गुरुजनों का आदर करें, सहपाठियों के साथ सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार करें, छोटे कर्मचारियों के साथ सहानुभूति और प्रेम का व्यवहार करें, अपने से छोटों की सेवा अपना कर्तव्य समझें, दूसरों के प्रति कोई भी ऐसा आचरण न करें जिसे वह अपने प्रति किया जाना अनुचित समझें, उन कार्यों से डरें जो निष्कृष्ट और त्याज्य हैं, मातृभूमि से प्रेम करें, जनता की सुखवृद्धि करें, जहाँ कहीं भी अवसर मिले भलाई करें। वे चाहते थे कि विद्यार्थी अपने अवकाश तथा छुट्टियों में गाँवों में जाकर गाँव वालों के साथ काम करें, अविद्या रूपी अन्धकार को जो हमारी अधिकांश जनता को आच्छादित किए हुए है ज्ञान के प्रकाश से दूर कर दें। वे चाहते थे कि भारतीय शिक्षित सहनशीलता, क्षमा तथा निःस्वार्थ सेवा के भाव को अपने जीवन में विकसित कर अपने छोटे भाईयों के उत्थान के लिए अधिक से अधिक अपना समय तथा शक्ति लगावें, उनके साथ मिलकर काम करें, उनके शोक तथा आनन्द में उनका हाथ बटावें, और उनके जीवन को दिनोदिन सुखमय बनाने का प्रयत्न करें। वे तो वास्तव में यह भी चाहते थे कि हम ईश्वर का स्मरण रखें, तथा यह विश्वास रखते हुए कि ईश्वर सभी प्राणियों में विद्यमान है अपने अन्य जीवधारी भाईयों से अपना सच्चा सम्बन्ध प्रतिष्ठित करें।

- डॉ. ज्योति जोशी
आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग

झुलसी हुई देह

झुलसी हुई देह
कोमल किसलय की
पल में बता जाती हे
रूठे मौसम का अंदाज,
चिरने लगता है
मटियाला आँचल
वसुंधरा के कांधे से
चटकने लगते हैं
रेत के शुष्क होंठ,
उस पर रेगिस्तानी आँधी सताती है।
मिचमिचाती है पंखुरियों की आँखों को
गिरती है उठती है
नन्हीं शाख किसी शैशव सी,
सुलगने लगती है पगडंडी
कुद यूँ तलवों तले
मानों कोई अग्नि शनैः शनैः बल रही हो
गर्भ में युगों से तथापि कोई तृष्णा
सर नहीं उठाती विलग हो जाने की
निर्भरता उसे विचलित नहीं करती
अपितु सिखा जाती है
धैर्य व प्रतीक्षा उस
जल रूपी प्रेमी की,
जो निष्ठुर तो है
किन्तु विश्वासघाती नहीं,
जिसकी करती आई है
अर्चना धरा की वेदी
हर मौसम के साथ,
उसका आगमन
इतना साधारण तो नहीं,
अपितु पदचाप होगी
गर्जन नाद के साथ
शीतल कदमों की।
उस विहंगम दृश्य को
देखकर भी क्या
नहीं भीग उठेंगी
सूखी पलकें मेरी बगिया की .....?
- शिवाली ढ़ाका, राजेश कुमार

यह हवा वो नहीं

यह हवा वो नहीं
जो आँगन में लगी
लजाती, महकाती
आम्रमंजरी को कभी
मखमली छुवन के साथ
हौले से छेड़ा करती थी,
यह आज की हवा है
जो पाँवों को जड़ों से
उखाड़ फैंकती है।
तीक्षण बाण के समान
ऊँची अट्टालिकाओं को
झरोखों में से भेदती हुई
तीव्र सरसराहट के साथ
पलक झपकते ही
शिखा पर जा बैठती है।
हाँ, ये आज की हवा है
जो अपनी इच्छा शक्ति से
दंभित दृष्टि को झुकाती हुई,
आँखों में धूल झोंकती हुई,
पतझड़ को रौंदती हुई
किन्तु हर छोटे-बड़े वृक्ष को
अपने आत्मिक स्पर्श से
भिगोती चली जाती है,
पुरातनपंथी तूफान
भयभीत होते हैं अब,
न जाने कितनों को
पीछे जो छोड़ आयी है,
मत टोकना रुकेगी नहीं अब
खोखले वचनों से
आत्म विश्वास से भरी यह आज की हवा।
- शिवाली ढाका, राजेश कुमार

मिट्टी की जीत

आखिर जीत ही गयी
वो मिट्टी जो जर्जर हो बह खिसकी थी नदी किनारे से।
चला यूँ हवाओं का बवंडर कुछ ऐसा,
कि बारिश ने भी दिया साथ।
हटना ही पड़ा बेचारी मिट्टी को,
टूट गया उसका विश्वास।
गिरकर उसे सागर में।
सागर ने भी जा फेंका उसे ज्वार संग तट पर।
अब तो मिट्टी थक ही चुकी थी इन दुत्कारों से।
फिर एक दिन थम गया बवंडरों का मंजर,
बारिशों का दौर।
सूरज निकला अपनी स्वर्णिम आभा के संग।
सूरज की किरणों का पाकर स्पर्श,
लौट आया मिट्टी का विश्वास।
फिर जमने लगी वह पहले सी दृढ़ता के साथ।
लेकिन इस बार चमक कुछ ज्यादा थी।
आखिर लौट आया था उसका अस्तित्व
और अधिक मजबूती के साथ।
एक बार फिर से बवंडरों से टकराने के लिये थी वह तैयार।।
- दीपक कुमार, चतुर्थ वर्ष यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

पार्वती

उस समय स्कूल बहुत कम हुआ करते थे। हमारे गांव में तो केवल मात्र प्राथमिक पाठशाला ही थी। लड़कियों को स्कूल पढ़ने नहीं भेजते थे। यदि भेजते थे तो मात्र केवल अक्षर ज्ञान हासिल करनेके लिए ।

पार्वती की पति की बहुत कम उम्र में ही मृत्यु हो गयी थी। वो घर घर जाकर सफाई का काम करती थी क्योंकि गॉवों में पशुओं के बाड़े(रहने के स्थान) का काम ही अपने आप में चुनोती भरा होता है। काम पर वो अपनी बच्ची बरखा को भी कर जाती थी। काम करके घरों से दूध, छाछ व रोटी मिल जाती थी। वेतन देने के उस समय पैसे नहीं हुआ करते थे केवल सेवा के बदले अनाज व खाद्य वस्तु मिल जाया करती थी ।

पार्वती चाहती थी कि उस की बेटी पढ़ लिख कर कोई सेवा का काम करे, जिससे कम से कम उसकी बेटी को घर घर जाकर सफाई तो नहीं करनी पड़े ।

वो गांव के मास्टर साहिब पंडित मनमोहन जी के घर भी काम करती थी। मास्टर जी ने उसकी लगन और कार्य देख कर बरखा को पांचवी तक तो पढ़ा दिया फिर आगे मिडिल तक पढ़ाने के लिए पार्वती कस्बे में आ गयी ये सोच कर कि यहां से शहर भी पास ही है आगे की पढ़ाई कराना आसान हो जाएगा । यहाँ भी वो मेहनत मजदूरी व सफाई के अन्य कार्य करने लगी।

समय गुज़रता गया और मेट्रिक के बाद बरखा ने नर्स की ट्रेनिंग कर ली थी और शहर के एक अस्पताल में काम कर करने लग गयी।

इसी अस्पताल में आज एक ऐसा एक्सीडेंट केस आया जिसमें घायल व्यक्ति के सिर पर चोट लगी थी, खून तो ज़्यादा मात्रा में नहीं बहा था किंतु वे घायल व्यक्ति बेहोश थे और बेसुध भी । उनकी इस गम्भीर हालत की वजह से उन्हें भर्ती तो कर लिया गया किन्तु उनकी ज़िम्मेदारी लेने वाला भी तो कोई होना चाहिए था। अस्पताल प्रशासन इसी बात से चिंतित था।

अगले दिन नर्स बरखा ने आगे बढ़ कर उनकी ज़िम्मेदारी ले ली शायद वो उनसे परिचित भी थी, बस इसीलिए ही । दो दिनों की देखभाल के बाद उस व्यक्ति को होश आया ,अच्छी देखभाल और समय पर चिकित्सा के कारण धीरे धीरे उनकी तबीयत में सुधार होने लगा साथ ही बरखा के विशेष ध्यान रखने से व् उसकी सेवा से उनकी तबियत में बहुत जल्दी से सुधार हो गया । इसी बीच उनकी पत्नी व एक रिश्तेदार को खबर भेजी तो वे लोग भी आ गए।

आज उनको अस्पताल से डिस्चार्ज किये जाने का दिन था। बरखा उनसे कुछ कहना चाहती थी किन्तु संकोचवश उनको वहा अपना परिचय बता नही सकी।उ सको अपना पुराना समय याद आ गया जब उसकी माँ इनके घर सफाई का काम किया करती थी। उसे लगा कहाँ वो पंडित जी ओर कहाँ वो अछूतकी देखभाल कहीं बात बिगड़ न जाये इसलिए मन मसोसकर रह गयी और कुछ न कह सकी ।

डिस्चार्ज करते समय डॉक्टर ने आखिर उनसे इस बात की चर्चा कर ही दी कह ही कि उनके जल्दी ठीक होने में उस नर्स बरखा की पूरी पूरी सेवा ही है जो वह मन से करना चाहती थीं, अन्यथा उनको ठीक होने में कुछ और समय लगता ।

ऐसा लगता है मास्टर साहिब आपका उससे कोई पिछले जन्म का संबंध है। मास्टर जी को यह जानकर अचम्भा से हुआ कि वो आखिर कौन है जिसकी निस्वार्थ सेवा के कारण उनकी सेहत में इतनी जल्दी सुधार हो गया।

मास्टर जी ने बरखा से मिलना चाहा। बरखा को बुलाया गया किन्तु उसको आने में संकोच हो रहा था। इतने दिनों बाद जब उसका उनसे सामना हुआ तो उसके नयन छलक उठे । मास्टर जी कहने लगे बेटी तुम ज़रूर किसी ऐसी संस्कारवान माँ की पुत्री हो जिसने तुम्हें अच्छे संस्कार दिए है। मै तुम्हें बस आशीर्वाद ही दे सकता हूँ कि तुम सदा सुखी रहो।

ये आपके पूर्व आशीर्वाद का ही फल है गुरुजी जो आज मैं यहां हूँ और हिम्मत करके उसने अपनी पूरी कहानी सुना दी। वो अपने नयनों से बहते नीर को नहीं रोक सकी उसका गला भए भर आया था।

तुम तो बेटी सेवा के एक ऐसे क्षेत्र में हो जहां कोई जात पात का भेदभाव नहीं होता । मुझे गर्व है अपनी इस बेटी पर जो समाज की सेवा में समर्पित है तुम सदा खुश रहो और ऐसा कह कर उन्होंने अपना हाथ उसके सर पर हाथ रख दिया। बरखा का दिल भर आया।

चलो मुझे अपने घर ले चलो बेटी अभी मैं पूरी तरह से सेहत मंद नही हुआ हूँ । मास्टर जी ने एक हक से ऐलान किया ।

ये जीवन बहुत छोटा है लेकिन सेवा की भावना परस्पर नए नए रिश्ते बना देती है और जीवन को सुखद।

अंशु सक्सेना (लेखा शाखा, विभाग प्रभा भवन)

जीवन एवं गीता

सबसे चौंका देने वाला प्रश्न
कि लोग कहां जाते हैं मरने के बाद..
कहां चले जाते हैं ये लोग
जिंदगी भर जी तोड़ काम करने के बाद..
आखिर क्या है जीवन का उद्देश्य?
क्यों मिले हैं हमें नाना प्रकार के भेष?
हर जीव सतत आनंद की तलाश में भटक रहा है।
बार बार आनंद के बदले दुःख के घूंट गटक रहा है।।
हर दम आत्म संतुष्टि के लिए हर जीव है यहां प्यासा।
मैं कौन हूं? कहां से आया हूं?
आती क्यों नहीं ये जिज्ञासा?
जरा सोचिए !आखिर क्या हैं
हमारे जीवन की असली समस्या ?
क्या वस्तु है जिसे प्राप्त करने के
लिए करनी चाहिए तपस्या?
बुढापा, बीमारी और मौत से
भागना चाहता हर कोई दूर।
बड़े से बड़े सपने हो जाते हैं
क्षण भर में ही चकनाचूर।।
तो क्या फायदा हुआ बनाने से बड़ी बड़ी योजना।
जरा सोचें आखिर किस लिए
ये मानव जीवन है बना?
गर सच में आपको सतत साश्वत
आनंद की तलाश है? हर समस्या का हल
श्रीमद् भगवद्गीता यथारूप के पास है।
श्रील प्रभुपाद लिखित ये गीता
आत्म ज्ञान का मूल स्रोत है।
विश्वास कीजिए ये गीता जीवन जीने के सूत्रों से ओतप्रोत है।
निवेदन यही कि गीता पढ़िए और हरि नाम धुनिए।
भगवत धाम प्राप्ति को जीवन का उद्देश्य चुनिए।।

- कृष्ण पाद दास

माँ

बिना माँ के घर, बेघर लगता है।
माँ से दूर रहना मुझे कहर लगता है।
ये सारा शहर, बयाबां लगता है।
साथ में तेरे भरा गाँव भी शहर लगता है।
तेरे हाथों से पिया वो दो घुंट पानी अमृत है।
आज कल महंगी बोतलों
का पानी भी जहर लगता है।
जाने तु कैसे समझ जाती थी मेरी तुतलाती जुबां।
अब सब कहने के बाद भी मुख्तसर लगता है।
माँग लूं चाहें हजार दुआए खुदा से 'असरार'
मेरे सर पे तेरा हाथ ही मुक्कदर लगता है।।

- अंकित पुलकित
द्वितीय वर्ष, एम.टेक संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

शुभ समाचार

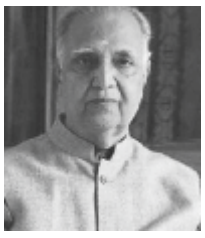

वाराणसी न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय के पौत्र न्यायमूर्ति (सेवानिवृतत) गिरधर मालवीय को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय कुलाधिपति बनाया गया है। गिरधर मालवीय इलाहाबाद उच्च न्यायलय के पूर्व न्यायधीश रह चुके हैं।

बीएचयू के जनसम्पर्क अधिकारी राजेश सिंह ने बताया कि कुलपति राकेश भटनागर की अध्यक्षता में हुई बीएचयू कोर्ट की 62 वीं बैठक में सदस्यों ने सर्वसम्मति से मालवीय के नाम पर सहमति जताई। राष्ट्रपति तथा बीएचयू के विजिटर रामनाथ कोविंद की सहमति के बाद सोमवार को हुई बैठक में 82 साल के मालवीय का चुनाव हुआ।

गिरधर मालवीय पंडित गोविंद मालवीय के पुत्र हैं और पंडित मदन मोहन मालवीय के पौत्र हैं कुलाधिपति पद के लिए काशी नरेश अनंत नारायण सिंह, पूर्व सांसद डॉ. मुरली मनोहर जोशी, बीएचयू के पूर्व कुलपति प्रो. हरि गौतम, प्रोफेसर वाईसी सिम्हाद्रि तथा प्रोफेसर पंजाब सिंह का नाम सामने आ रहा था। कुलपति भटनागर ने सदस्यों के सामने मालवीय का नाम रखा जिस पर सभी 42 सदस्यों ने अपनी सहमति जताई।

मैं उड़ना चाहता हूँ।

मैं बंधकर नहीं रहना चाहता पाश में,
मैं उड़ना चाहता हूँ मुक्त आकाश में,
इन सर्वव्यापी दुःखों के मायाजाल में,
स्वार्थपरकता के जंजाल में,
सच्चाई की वेदना में,
कम होती संवेदना हमें
मानवता के क्रन्दन में,
झूठ प्रपंच के बंधन में।
मैं बंधकर नहीं रहना चाहता इस पाश में,
मैं उड़ना चाहता हूँ मुक्त आकाश में
मैं रहना चाहता हूँ आत्मीयता के उजास में
स्नेह से परिपूर्ण आवास में।
जीना चाहता हूँ उन कोरी कल्पनाओं में,
भूले बिसरे मासूम बचपन की यादों में
सपने देख रहा हूँ इस विश्वास में
जी भी रहा हूँ इस अहसास में
अब बंधकर नहीं रहना चाहता पाश में
मैं उड़ना चाहता हूँ मुक्त आकाश में।
दीपक कुमार, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

आज ईश्वर को पास पाया है

खुद के अंदर झांक के देखो तो
आज ईश्वर को पास पाया है।
क्यूं? कब? कैसे? क्या? सबका जवाब पाया है
आज ईश्वर को पास पाया है।
कर दिखना है जीवन सफल
जीना है एक निर्भय जीवन
करने है कुछ ऐसे काम की
मुझे तोह हसते हुए उनके पास जाना है
आज ईश्वर को पास पाया है
पहले मन घबराता परिस्थितियों से डरता
क्या करें क्या नहीं कशमकश में रहता
आज खुद को जीवित पाया है
आज ईश्वर को पास पाया है
कोई रोक नहीं सकता हमें
हम सबने तो यह वरदान पाया है
अगर ध्यान से सोचोगे तो आप भी कहोगे
आज ईश्वर को पास पाया है
मुझे सही में जीना आया है
जब से ये एहसास पाया है
गुरु गोविंद दोनों क्यूं एक है
आज ईश्वर को पास पाया है।

डॉ. महीपाल जडेजा
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग
रसायनिकी अभियांत्रिकी विभाग
अंग्रेजी से अनुवादित कविता

तेरा चेहरा

ये जो तेरा चेहरा है,
इस पर भी एक चेहरा है।
कहीं पर रंग गहरा है,
तो कहीं मुखौटे का पहरा है।
कोई एक ही पर ठहरा है,
तो किसी पर यही रंग दोहरा है।
ये जो तेरा चेहरा है।
दीपक कुमार, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

वक्त

यह वक्त बड़ा बेदर्द है,
भूला देता हर दर्द है।
वक्त बड़ा ही सख्त है,
पलट देता बड़े बड़े का तख्त है।
जो जान लेता है, उसको होकर तप्त है,
उसी का नाम, बुलंद हर वक्त है।
हुआ बहुतों का सूर्य इसके आगे अस्त है।
हिटलर जैसे तानाशाह भी इसके आगे पस्त है।
वक्त ही बनाता है राजा,
वक्त ही बना देता है रंक।
जिसने इसको नहीं है जाना,
झड़ गए है उसके हर पंख।
जो जा ले इस वक्त के,
पहचान ले इस वक्त को
जो जीत ले अपने आपको,
पा लेता है, ऊँचाई के हर तख्त को।
तोड़ दे बंधन को सब,
छोड़ दे आलस्य को अब।
सोच ले ये बस अभी
पाना है सब कुछ यही।।

- प्रवीण शर्मा, तृतीय वर्ष यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

भावुक है वो

शब्द है वो, आकार नहीं
उसका किसी से सरोकार नहीं
भावुक है वो
आता उसे है
भावों में बह जाना।
उसकी आँखें सब
कुछ कह देती हैं,
नहीं आता
उसको दर्द छिपाना।
खुश हो या कभी हो गमजदा,
पर नहीं भूलती मुस्कुराना।
खुद वो सब सह लेती है,
पर नहीं आता उसे
किसी का दिल दुखाना।
सहज शालीन सी
जान पड़ती है,
मुख पर रहता
विनम्रता का गहना।
जग का वो ध्यान नहीं धरती
चाहे दे कोई कितना भी ताना।
अपनो पर आन पड़े जो विपदा,
धर लेती चंडी का बाना।
अटल है उसका हर इरादा,
जो ठान लिया उसको है पाना।
वचन में नहीं कोई उस सरीखा,
जो कह दिया
वो करके दिखलाना।
गंभीर शुष्क
भले जान पड़ती है,
पर भीतर में छिपा है
सहज बचपना।
बस पाक दिल है
और नेक इरादा,
मुश्किल है बस
उसे समझना,
पर नहीं आता
उसको समझाना
बस भावुक है वो ....
दीपक कुमार
चतुर्थ वर्ष यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

पृष्ठ 1 का शेष .....

जीवन का सच्चा लक्ष्य

क्योंकि ये प्रश्न ज्ञान के इन साधनों की पहुँच से परे है। अतः अपनी समस्या का हल हमें कहीं और खोजना होगा।

''प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।

एनं विदंति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।''

अर्थ - प्रत्यक्ष अर्थात् पर्यवेक्षण या अवलोकन द्वारा और अनुमान अर्थात् विश्लेषण या विवेचन द्वारा जिस तत्व का ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता, उसका ज्ञान वेदों द्वारा प्राप्त होता है। यही वेदों का वेदत्व है।

अर्थात् हमें वेद और शास्त्रों की ओर मुड़ना होगा, वे ही हमारी समस्या का निदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त समय समय पर अनेक ऋषियों और महात्माओं ने भी हमारा मार्गदर्शन किया है। परन्तु यह गृहस्थ ज्ञान न तो अवलोकन से और न ही विवेचन से प्राप्त हो सकता है। इसके लिए आरम्भ में हमें विश्वास करना होता है, परन्तु अंत में यह ज्ञान अनुभूति से प्राप्त होता है।

अब हम उपरोक्त प्रश्नों की ओर लौट चलते हैं। इस सृष्टि का उद्देश्य अथवा भगवत् संकल्प क्या है? वेद के अनुसार सृष्टि का उद्देश्य है इस धारा पर भगवान् द्वारा अपने आप को अनेक रूपों में प्रकट करना। दूसरे शब्दों में कहें तो मनुष्य में भगवान् को प्रकट करना। अर्थात् ''एकोऽहम् बहुस्याम।''

सावित्री के अनुसार सृष्टि का उद्देश्य है -

Nature shall live to manifest secret God. The Spirit shall take up the human play, This earthly life become the life divine,

अर्थात् इस धारा पर दिव्य जीवन को अभिव्यक्त करना।

एक और सत्य जो हमारे सामने बार-बार रखा गया हे, वह है कि मनुष्य स्वयम् भगवान् है। उपनिषदों में इस सत्य को प्रकार कहा गया है-

''अहम ् ब्रह्मास्मि। तत् त्वमसि। अयमात्मा ब्रह्म।''

गीता में इसी सत्य को एक अलग प्रकार से कहा गया है - ''ईश्वरः सर्वभूतानां हृदेशेऽर्जुन तिष्ठति''

अर्थात् ईश्वर सभी जीवों के हृदय में विराजमान है।

स्वामी विवेकानन्द ने इसे इस प्रकार कहा है, ''एक शब्द में कहें तो तुम ही परमात्मा हो।''

परन्तु मनुष्य जो वस्तुतः स्वयम् ब्रह्म है और प्रकृति का स्वामी है, अज्ञानवश उसका दास बन कर जी रहा है। वह अमर है परन्तु मृत्यु के जाल में जकड़ा हुआ है। वह ज्ञान का सूर्य है परन्तु अज्ञान के अन्धकार में भटक रहा है। वह आनन्द स्वरूप है परन्तु घोर दुःख भोग रहा है। अतः अज्ञान, मृत्यु और दुःख पर विजय प्राप्त करना, अर्थात् अपने सत्य को प्राप्त करना ही उसके जीवन का एकमात्र और तर्क संगत लक्ष्य है।

''असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय।''

सावित्री के शब्दों में

उतरोत्तर सच्चिदानंद की ओर बढ़ना और अपने अन्दर विद्यमान भगवान को अभिव्यक्त करना ही हमारा सच्चा लक्ष्य है। यह लक्ष्य न केवल सृष्टि के उद्देश्य के अनुरुप है, शास्त्र सम्मत है, और तर्क संगत है, यही भगवत् इच्छा है और इसलिए यही हमारा धर्म भी है।

परन्तु इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हमारा कर्म क्या हो, यह प्रश्न अभी भी शेष है।

सर्वोच्च कर्म :

शास्त्रों ने न केवल परम गुहय सत्य ''अहम् ब्रहमस्मि''। की घोषणा की है अपितु इस सत्य को प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के योग का विस्तार से वर्णन भी किया गया है। उनमें से सर्वश्रेष्ठ और सर्वसुगम मार्ग है यज्ञ, त्याग अथवा समर्पण का मार्ग। अर्थात् यदि हम अपने सर्वोच्च सत्य को पाना चाहते हैं तो हमें त्याग करना होगा। मानवमात्र में प्रतिष्ठित भगवान् को अपना जीवन समर्पित करना होगा, मानवजाति की सेवा करनी होगी।

''न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशु।''

अर्थ न तो कर्म से, न वंश वृद्धि से और न ही धन से, अपितु केवल त्याग द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार नर सेवा ही नारायण सेवा है।

दूसरे मनुष्यों की सेवा करना, लाखों जप तप के बराबर है। यह जीवन अल्पकालीन है, संसार की विलासिता क्षणिक है, लेकिन जो दूसरों के लिए जीते है, वास्तव में वे ही जीते है।

अज्ञानी पुरुष अपने को सबसे अलग जानता है, इसलिए वह अपने स्वार्थ के अनुरूप कर्म करता है। परन्तु आत्मदर्शी सभी जीवों में परम एक को देखता है, वह ''वासुदेवः सर्व इति'' ''सर्व खल्विदं ब्रह्मम्'' और ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सत्य के अनुरूप परमार्थ के लिए कार्य करता है।

नर सेवा का मार्ग व्यक्तिगत मुक्ति के लिए तो उपयुकत है, परंतु व्यक्तिगत मुक्ति हमारा अंतिम उद्देश्य हो सकता। क्योंकि ''आत्मा तो नित्यमुक्त है और बंधन केवल भ्रम है।'' व्यक्तिगत मुक्ति के अन्तरिम उद्देश्य से कहीं अधिक भव्य और महान उद्देश्य है धरा का दिव्यीकरण। यही उद्देश्य भगवत् उद्देश्य है जिसमें जन जन की मुक्ति स्वतः ही निहित है।

धरा के दिव्यीकरण का जो मार्ग है प्रकृति ने चुना है वह है पृथ्वी का उत्तरोत्तर विकास। और पृथ्वी की विकास यात्रा में भारत के लिए जो स्थान प्रकृति द्वारा निश्चित किया गया है, वह है जगत्गुरु का स्वर्णिम सिंहासन।

भारत का भविष्य बिल्कुट सपष्ट है। भारत संसार का गुरु है। जगत् की भावी सरंचना भारत पर निर्भर है। भारत जीवित जाग्रत आत्मा है। भारत जगत् में आध्यात्मिक ज्ञान को मूर्तमान कर रहा है। (श्री अरविंद)

भारत के अस्तित्व का एकमात्र हेतु है- मानवजाति का आध्यात्मीकरण। यही उसकी जीवन रचना का प्रतिपाध्य विषय है, यही उसके अनंत संगीत का दायित्व है, यही उसके अस्तित्व का मेरुदंड है और यही उसके जीवन की आधारशिला है। (स्वामी विवेकानंद)

परंतु भारत आज अनेक समस्याओं से जूझ रहा है- चारों ओर अराजकता, भ्रष्टाचार, गरीबी और आान का बोल-बाला है। भौतिकवाद और उससे उत्पन्न भोगवाद हमारे पारिवारिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों को छिन्न-भिन्न कर रहा है। दूसरी ओर विदेशी ताकतें देश को कमजोर करने और तोड़ने के लिए निरंतर सक्रिय है। भारत भगवान् द्वारा निर्दिष्ट अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में न केवल असमर्थ जान पड़ता है अपितु ऐसा प्रतीत होता है कि वह उसे लगभग पूर्णतयः भूल चूका है। ऐसे सम य में भारत के आध्यात्मिक ज्ञान की रक्षा और उसकी पुनर्स्थापना ही परमोच्च कार्य है। भारत का पुनर्जागरण और उत्थान भगवत् इच्छा है और भगवत् योजना के अनुरुप है, इसलिए यही हमारा धर्म भी है और कर्तव्य भी। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, राम राम करने से कोई धार्मिक नहीं हो जाता। वो प्रभु की इच्छानुसार काम रकता है वही धार्मिक है।

भारत के युवकों से यही अपेक्षित है स्वयम् की उन्नति और मुक्ति के साथ साथ देश का उत्थान और मानवजाति का कल्याण। इस कार्य को करने के लिए -

हमें देह, प्राण और मन से शक्तिशाली बनना चाहिए।

भारत से सम्बन्धित सभी प्रकार का ज्ञान अर्जित करना होगा, इतिहास, दर्शन, सामाजिक संरचना, वेद, उपनिषद्, गीता, नृत्य, संगीत, आयुर्वेद, अर्थ शास्त्र इत्यादि का गूढ़ अध्ययन करना होगा।

भारत की अवधारणा और उसके उद्देश्य को जानना होगा।

भारत की वर्तमान समस्याओं को जानना होगा और उसकी उन्नति और समृद्धि के लिए कार्य करना होगा।

अतः गीता में उद्धृत सत्य वासुदेवः सर्व इति और धरा के दिव्यीकरण के भगवत् संकल्प पर श्रद्धा रखते हुए तथा नर में नारायण के दर्शन करते हुए हमें भारत के उत्थान के लिए आत्मोत्सर्ग करना होगा। आत्म-समर्पण का यह मार्ग न केवल हमारे समाज के देश की उन्नति के लिए उपुयक्त है। अपितु मोक्ष एवं भगवत् प्राप्ति के हमारे व्यक्तिगत लक्ष्य को प्राप्त करने का भी सर्वाधिक सुगम मार्ग है। यही कार्य सम्पूर्ण जगत के लिए भी सर्वाधिक कल्याणकारी है। यही कर्म धरा के दिव्यीकरण के भगवत् संकल्प के अनुरूप है। यही कर्म सभी कर्मों में सर्वश्रेष्ठ कर्म है।

- निरुपम रोहतगी

सहआचार्य, यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग

बेटी

मेरे घर पैदा हुई एक नन्ही कली।
मेरे आँगन में फूल की तरह खिली।।
मेरी आशाओं को वों पूरा करेगी।
कल्पना चावला की तरह आकश में उडेगी।
ये भारत के भविष्य की विषमता है।
बेटी के पैदा होने की ना किसी को खुशी,
ना ही किसी को प्रसन्नता है।
बेटी माता पिता के जीवन का विश्वास है।
खेद! भारत में निरंतर भ्रूण विनाश है।
प्रतिभा पाटिल, मोना पृथ्वी, महादेवी वर्मा
संसार के लिए अनुकरणीय है।
आगे बढ़ने के लिए जो प्रोत्साहन
दे वो देश धन्य है।

- मनवीरी रानी (रसायन शास्त्र विभाग)

हू हू करती ये अनिल

हू - हू करती ये अनिल
बरखा के पहले आयी है?
ले पुष्प सुगंध अपने ये संग
चली चहुँ ओर घाटा घन घोर
मदमस्त हो, वृक्षों पे झूम-झूम
ये मस्ती ले कर आयी है।
हू-हू करती ये अनिल
वरखा के पहले आयी है,
मन्द-मन्द मुस्का के ये
या फिर खिलाखिला के हँसती ये
झरनों की सी आवाज नहीं
न ही नदियों का रब लायी है।
हू-हू करती ये अनिल
बरखा के पहली आयी है।
शीत काल का माध्यम वन
बसन्त का यह प्रसार बन
सागर की तटों से उठ
पतों को चिरती आयी है, हू-हू करती ये अनिल
बरखा के पहले आयी है, अनिल की यह प्रेम पताखा
बरसी है सबके ऊपर
अथक परिश्रम, अडिग विश्वास
को बतलाने यह दूर देश से आयी है,
हू-हू करती ये अनिल
बरखा के पहले आयी है,

- शिवम् सिंह, द्वितीय वर्ष, जनपद अभियांत्रिकी विभाग

अनकहा इज़हार

जब देखा तुमको पहली बार
हो गया था उसी पल प्यार
कर लूँ दिल के लब्जों का इज़हार
यही सोचा था मैंने यार
पर जब देखा तुमको दूसरी बार
कर ना पाया अपनी नज़रो को इन्कार
लगा इक पल के लिए ऐसा
जैसे तुम्हीं हो मेरे जीवन का सार
अब मैं देख रहा हूँ तुमको तीसरी बार
लेकिन महसूस कर रहा हूँ इक दरार
क्योंकि जब उलझ गई तुम्हारी जुल्फे
तो किसी और ने आकर दिया उन्हें संवार
समझा लिया था दिल को अपने
कि अब ना देखूँगा चौथी बार
पर रोके कहाँ रूकती है ये नज़रे
देखने से तुमको आ जाती है जो बाहार

- भवानी सिंह मक्कड़

अंतिम वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग

फास्ट फूड या स्वास्थ्य की सुरक्षा?

जीवन अनमोल है गति जीवन नहीं है, समय का अभाव सभी के पास है किन्तु क्या यह तर्क हमारे स्वास्थ्य पर भी लागू होता है? एक बार शांत मन से सोचे। जीवन में काम, आराम, खान पान, रहन सहन व पहनावे सब का एक अलग अलग अर्थ है इनका कोई विकल्प नहीं है अतः इसे समय की कमी से जोड़ा नहीं जा सकता और इसे अनदेखा भी नहीं किया जा सकता।

कभी कभी समय कि कमी के कारण हम ''फास्ट फूड'' को अपना लेते हैं और कभी अपना स्वाद बदलने या शान के कारण। समय की कमी के कारण कभी इसका सेवन अपवाद के तौर पर स्वीकार किया जाये तो सही है किन्तु यदि इसे दैनिक व नियमित रूप से अपना लिया जाये तो स्वास्थ्य कि दृष्टि से ये कदापि उचित नहीं है।

यथा नाम तथा गुण : फास्टफूड भले ही कम समय में पक जाते हों या कभी नियमित भोजन का एक विकल्प हों किन्तु इनमें वो गुणवत्ता होती ही नहीं है जो नियमित पकाए गये और विशेष रूप से घर में बनाये गये भोजन में होती है। भोजन को पकने में एक उचित समय, प्रक्रिया और भावना कि आवश्यकता होती है। खास कर यदि भोजन घर की गृहणी के द्वारा पकाए हुए हो। ये शुद्ध भोजन सम्पूर्ण आहार होती है इसीलिए यह पूर्ण भोजन कहलाता है जो रुचिकर होने के साथ- साथ स्वास्थ्यवर्धक भी होता है। भारतीय परम्परा और संस्कार में भोजन का अपना एक अलग ही महत्व है

हमारी संस्कृति के प्रतिकूल : फास्ट फूड का चलन वहां से है जहाँ समय और भावना दोनों की कमी है। बेशक ये कुछ ही मिनटों में पक जाता हो किन्तु ये नियमित नहीं हो सकता है। इस प्रकार के भोजन को हम आधुनिकता और होड़ के कारण भले ही अपना लेते हो किन्तु ये हमारी संस्कृति के अनुकुल नहीं है, कामकाजी महिलायें कई बार समय अभाव के कारण इस प्रकार के भोजन को अपना लेती है किन्तु चलन और आदत में आ जाने के कारण बच्चे भी इसको ही पंसद करते हैं और नियमित इसे खाने कि जिद करते हैं। ऐसे में वे इसके खाने के आदि हो जाते हैं और वे स्त्रियाँ अपनी संस्कृति से दूर होती चली जाती है। आज लगभग यही स्थिति है। हम हमारे पारंपरिक व पोषक नाश्ते और भोजन से दूर होते चले जा रहे है, ये स्थिति हमारे सामाजिक परम्परा को भी परोक्ष रूप में प्रभावित कर रही है, वास्तव में यह एक चिन्ता व चिन्तन का विषय है जिस का मनन व मंथन आवश्यक है।

पाचन तंत्र पर इसका प्रभाव : फास्ट फूड में अत्यधिक वसा और शुगर होती है जो मोटापा, ब्लड शुगर जैसी बीमारियों कि जनक होती है, इसी तरह कई फास्ट फूड के पकाने में एसिड, प्रेसेर्वेटिव व तीखे मसालों का प्रयोग होता है जो पाचन में एसिडिटी तो पैदा करता ही है साथ ही शरीर कि हड्डीयों में कैल्शियम व फास्फोरस कि मात्रा को भी कम करता है। इस तरह के स्वादिष्ट भोजन में फाईबर्स कि मात्रा कम होती है इस लिये ये देरी से पचते हैं और पाचन तन्त्र को भी प्रभावित करते हैं।

फास्ट फूड की लत से बचे: फास्ट फूड किसी भी प्रकार से लाभप्रद नहीं है जितना हो सके हमें इनका प्रयोग नहीं करना चाहिये। फास्ट फूड के नियमित सेवन के व्यसन से बचना चाहिये, अन्यथा इसकी लत लग जाती है जो हर प्रकार से हानिकारक होती है, इसका सेवन जीवन शैली पर भी विपरीत प्रभाव डालता है। आज यह भी देखने में आ रहा है कि जब बच्चे ऐसे फास्ट फूड के आदि होने लगे है तो माताएं इनका विकल्प तलाशने लगी है। हमें इसका विकल्प नहीं तलाशना है हमें हमारे अपने पारंपरिक भोजन को पकाने और उसे पुनः नियमित खाने की फिर से आदत डालनी होगी।

गृहणियों का दायित्व : गृहणियों को चाहिये कि वे अपने परिवार को अपनी परिवेश के अनुसार ही भोजन पका कर दें। हमारी संस्कृति में सदा पोषक और स्वस्थ्यवर्धक भोजन का प्रावधान रहा है, इसके सेवन से हमारी आध्यात्मिक उन्नति भी होती है। आज भी भाँति भाँति के व्यंजन उपलब्ध है बस उनको सीखने और अपनाने की संकल्पता होनी चाहियें, हां गृहणियों को बस इसे जिम्मेदारी और चुनौती के रूप में स्वीकारना ही होगा। शुद्ध, स्वास्थ्यवर्धक और परंपरागत भोजन उपलब्ध कराना उन्हीं की जिम्मेदारी है। आखिर वो घर की गृहलक्ष्मी हैं। स्मरण रहे कि घर में नियमित रूप से पके भोजन में खुशहाली व सम्पन्नता दोनों समाहित है।

अंशु सक्सेना-
लेखा शाखा विभाग

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान (गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग) की ओर से मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जयपुर में पांच दिवसीय कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण शिविर शुरू किया गया। जिसमें केंद्र सरकार के कार्यालय जैसे जनगणना कार्य निदेशालय, कृषि निदेशालय, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2 , कदन्न विकास निदेशालय, महालेखाकार कार्यालय, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान कार्यालय, एवं लेखा परीक्षा का कार्यालय(उ. प. रे) कार्यालयों के 20 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस सत्र का समापन 12 दिसंबर 2018 को हुआ7 शिविर शुभारंभ के मौके पर मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के कुलसचिव जय नारायण जी उपस्थित थे और उन्होंने अपने विचार रखें। इससे पूर्व भी वर्ष 2016-17 एवं 2017-18 में भी मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में 5 कार्यक्रम आयोजित हुए इन सभी शिविरों के शुभारंभ के मौके पर मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के कुलसचिव जय नारायण जी के साथ-साथ प्रोफेसर श्रीमान अशोक अग्रवाल जी ,पुस्तकालय अध्यक्ष श्रीमान दीप सिंह जी एवं कंप्यूटर लैब के विभागाध्यक्ष राजपाल सिंह जी उपस्थित थे और उन्होंने राजभाषा के संबंध अपने-अपने विचार रखें। कार्यक्रम का संचालन मुख्य समन्वयक एवं हिंदी शिक्षण योजना जयपुर के प्राध्यापक श्री राजेश कुमार मीना ने किया उन्होंने ने कहा की वर्तमान समय में कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध है जिसका उपयोग किया जा सकता है । कार्यक्रम के बीच में 2 दिन कंप्यूटर विशेषज्ञ के रूप में श्री मीनू खेम नानी एवं श्री चतर सिंह ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को वर्ड, एक्सेल, पावर, प्वाइंट, मेल एवं इमेज प्रोसेसिंग से संबंधित जानकारियां दी । कार्यक्रम का मंच संचालन संपर्क अधिकारी हिंदी श्री विजय भट्ट द्वारा किया गया।

श्री राजेश मीना, कार्यक्रम समन्वयक एवं हिंदी प्राध्यापक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
हिंदी शिक्षण योजना,जयपुर

आम लोग

अक्सर खबरों में सुनने में आता है कि आम लोगों में रोष, आम लोगों में भगदड़, फलाना फलाना
ये न्यूज चैनल वाले आम लोगों को इतना आम बना देते हैं कि मानो वो कोई विलुप्त प्रजातियां हो तो आइयें आज बात करते हैं इन So Called आम से लोगों के बारे में।

मेरे तड़के आँख खुलने से पहले, कई घरों का काम निपटाने के बाद, जो औरत मेरे घर की डोर बेल बजाती है वो बातूनी सी मेरे घर की बाई, कोई काम तो नहीं। दिन भर की थकान के बाद भी 'मैडम जी ये', 'मैडम जी वो' करना नहीं भूलती, तो वो कुछ खास ही होगी।

मेरे दफ्तर का वो Peon मजाल की सफाई करते वक्त वो एक भी तिनका छोड़ दे, जब वो काम करता है न तो ऐसा लगता है, कि मानो उसे अपने काम से कितना प्यार हो, अपने काम से प्यार करने वाला मेरे ऑफिस का वो Peon कोई आम तो नहीं लगता। राजगद्दियों पर बैठे तानाशाहों को काम के प्रति प्यार और वफादारी सिखा जाता है। तो वो कुछ खास ही होगा।

अब दूर कहाँ जाएं, अपने घर की माँओ (Mothers) को ही ले लीजिये। खुद से पहले दूसरों के रखे का हुनर सबके पास तो नहीं, तो फिर ये दुर्लभ हुनर जिसके पास होगा वो कोई आम तो नहीं, यकीनन कुछ खास ही है।

पेट भरने के लिए ते सभी नौकरी करते हैं, उसमें क्या अलग है, मेरा ही वो दोस्त जो दफ्तर में पूरा दिन काम करने के बाद कुछ बच्चों को ट्यूशन देने जाता है, समाज के एक हिस्से को शिक्षित करना, कोई आम बात तो नहीं कुछ खास ही है।

ऐसे ही कई खास लोग हैं जो आस पास है।

रैंप पर चलने वाली मॉडल्स, संसद में लड़ते नेता और कंट्रोवर्सीज में छाए रहने वाले चेहरे ही खास नहीं है, मेरे घर की बाई मेरे ऑफिस का हमारे घर की मायें और आपका ही कोई दोस्त, ये खुद जानते है की वो कितने खास है।

– रेणू बिष्ट
शोधार्थी, रसायनिकी अभियांत्रिकी विभाग

फिर भी क्यों हार जाते हैं हम?

जब हमें ईश्वर ने हर वो चीज दी है जो हमारे लिए जरूरी थी या जरूरी थी या जरूरी है या उस वस्तु को थोड़ी लगन और मेहनत से पाया जा सकता है तो फिर हम क्यों अपने आप को कोसने लग जाते हैं और अपने मार्ग से विचलित हो हारने लगते हैं, जबकि हमें पता है कि पतझड़ में पूर्ण रूप से झड़ चुका पेड़ भी कुछ अरसे बाद आने वाले बंसल का इंतजार करने लग जाता है। प्यास से त्रस्त वसुधा भी सावन के बादलों का बेसब्री से इंतजार करती है और एक भंवरे के अपने प्रति प्रेम को देख एक मुरझाया हुआ फूल भी खिल जाता है तो क्यों जिंदगी में कुछ समय के दु:ख और हताशा के बादलों को देख कर ही प्राणी घबरा जाता है और अपने आय का वजूद मिटाने की सोचने लग जाता है, आखिर क्यों?

किसी चेतना शून्य में भी कालचक्र की गति के साथ चेतना का प्रसार होने लगता है। व्यायकता आने लगती है। जब हमें हमारे माता पिता ने अपनी दुनिया का सितारा माना है, तो फिर हम क्यों सिर्पु अमावस की काली रात को अपनी बैरन मान बैठते हैं, जो फिर से जगमगाते चाँद वाली पूर्णिमा का तुम्हें सिर्फ न्यौता देने आई है। उन माता-पिता ने हमारे सपने पूरे करने के लिए जिंदगी में हजारों इम्तिहान दिए। कुछ में वो असफल भी हुए, परन्तु उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी और हम सिर्फ एक या दो इम्तिहानों में असफल क्या हुए हमने अपना वजूद मिटाने की ठान ली। अरे ये वजूद तो तुम्हारा है ही नहीं ये तो तब तक उन माता पिता का है, जब तुम और हम उनके जैसे हजार इम्तिहानों में असफल होंगे और फिर भी अडिग बन सफलता के एक झौंके के इंतजार में खड़े रहेंगे डटे रहेंगे।

हमें अपने अनुभव उनके अनुभवों की तरह परिपक्व करने पड़ेंगे। यदि हमारे स्वप्न बड़े हैं तो हमें उन सपनों के लिए एक बड़ा इंतजार तो करना ही पड़ेगा ना। हर पन्ने को यदि हम दस बार पढ़ते हैं तो इसका तात्पर्य हो नहीं। कि हम पागल हैं या अपना वक्त जाया कर रहे हैं बल्कि इसका आशय है कि हम हर बार एक नयी सोच हमारे जेहन में बिठा रहे हैं। हमारी जिदंगी भी वो पन्ना ही है जिसके हर रीगटे में रंगीन सपने छिपे है।

इन सबके पीछे एक मूल वजह है। अनुभवों की अपरिपक्वता। या तो उम्र में परिपक्व ना होने पर उसके अनुभव कच्चे होते हैं जो उसके निर्णय लेने की क्षमता को कम कर देते हैं या फिर इंसान उम्र में तो बड़ा हो जाता है परंतु दुनिया से कुछ सीखने की बजाए अपने आप में आलसी प्रवृत्ति या व्यस्तता/ सीमितता की वजह से अच्छे अनुभवों से वंचित हो जाता है और इस प्रकार अपरिपक्व अनुभव उसके नैतिक मूल्यों में तो इनन करते ही हैं साथ ही साथ उसकी अधोमुखी विचारधाराओं को भी गति देने लगते हैं और उसे लगातार सुषुप्तता के गह्वर में धकेलने लगते है जिसका उसे भी पता नहीं लगता कि वो गहवर पानी का है या सिर्फ दलदल एवं अंतिम परिणाम उसे वजूद खत्म करना हितप्रद लगने लगता है।

वर्तमान पीढ़ी इसी समस्या में पूरी तरह उलझ चुकी है। जहाँ हम एक और इस पीढ़ी को सफलता के पायदान पर चढ़ते देखना चाहते हैं वहीं दूसरी ओर हमें अप्रत्यक्ष रूप से अधोन्मुखी गति स्पष्ट नजर आ रही है। हमें किसी भी तरीके से दूर करने की जरूरत है।

एक नाविक भी बड़े से बड़े तूफान में अपनी नौका डाल देता है, सिर्फ अपने हौंसलों के दम पर जबकि तूफान उसके अस्तित्व को मिटाने की पुरजोर कोशिश करता है। पंक के बीच से भी एक कमल खिल उठता है। तो ही तो समस्याओं में उलझे इंसान हैं यारों, हम क्यों नहीं अपनी आशाओं को मजबूत कर पाते? एक बिम्ब भी अपनी अपनी असलियत से अनभिज्ञ रहता है, जब तक एक क्षणभंगुर शीशे के सामने नहीं आता तो हम क्यों नहीं समझते कि वो क्षणभंगुर शीशा (आईना) ये समस्याएँ ही हे जो हमें वक्त वक्त पर अपनी असलियत का ज्ञान कराती है और फिर भी हम उन्हें नश्वर ना मान कर उस आईने में खोने लगते हैं। हमें अपने आप को उस डूबते सूरज की भाँति समझना होगा जो अस्त होता है तो सिर्फ एक नयी सुबह लाने के लिए तिमिर लाता है तो सिर्फ आशा की किरणे लाने के लिए।

वक्त के तराजू पर तू विश्वास करता चल, हर कदम पर उम्मीदों की श्वास भरता चल, हृदय रूप धर कर बहाने असफलताएँ आऐंगी, विवशता और कर्महीनता के आयाम भी वो लाऐंगी गर्त में ना झाँकना फिर ना रोक सकेगा वो छल।

हर कदम पर उम्मीदों की श्वास भरता चल।

– नेमीचन्द मावरी, शोधार्थी, रसायन शास्त्र

मंजिल

ऐ राही मेरे मिलने की तलाश न कर
हो जायें जहाँ तुमसे खफा
तू बस खुद को हताश न कर
बस खुद में डूब जा
किसी की तलाश न कर
खुद से पूछ क्या पाना है तुझे
दुनियाँ तो रास्ते बदलवा सकती है।
किसी पर न कर भरोसा
बस चलता ना पहुँच कर और
जहाँ सब होकर भी एक अलग सा नशा हो
कोशिश हो न हो पर भला तो हो
जहाँ देख सकें पहाड़ो की ऊँचाई
तो समन्दर में डूबने का डर भी न हो
ऐ राही चलता जा किसी की तलाश ना कर
शुरूआत कराने वाले बहुत मिलेंगे पर साथ
चलने वाला कोई नहीं।
तुझे अकेला छूना है उस ऊँचाई को
जहाँ तेरा कोई और नहीं
जब कभी किसी दुनिया में हो
इस बात को याद कर
जन्म दिया जिसने उसकी पुकार कर।

- स्वपनेश मीणा
तृतीय वर्ष, रासायनिकी अभियांत्रकी विभाग

रेगिस्तान आँखें

कुछ दिन की मेहमान सही तू, नन्हीं सी मेरी जान वही तू
फिर से लेने इम्तिहान मेरा चिरया आई है घर को अपने
बेरुखी सी तेरी उड़ जाने कि गुजारिश, मालूम है मुझे तेरे
सभी वो सपने कुछ सालों का हूँ मेहमान मैं अब,
बर रोना नहीं, मैं ना रहूं तब
मेरी प्यारी सी मुस्कान बनना, हँस के खुश रखना दिल
को अपने। दा की आँखें अब भी नम हैं
उस बेरूखी में, बस जरा सा दम हैं
कहानी में उनकी, कई दासियाँ तब ईनाम है
राजकुमारी हूं इस पल की,
ये ही दा का पैगाम है।
पनघट पे मेरी झूला झूलने,
कभी खुसफुसाने तो कभी मुझे सुलाने,
प्यारी सी लोरी, साँवली सी रात मैं
तभी आ गई दासियाँ, मुझको रूलाने
एक दिन शहनाई जो गूंजेगी
गालिब, वो रात बड़ी बेरहम होगी
एक पल में क्या से क्या हो गया
गुलजार सी मेहफिल में मेरा मन खो गया
हजारों लोगों से तब से घिरा रहूँगा
पर मेरी आँखें तो बस तेरी डोली पर होगी।
दिन के ना ढलने की तलब
मेरी रेगिस्तान आँखे भी कुछ नम होगी।

- योगेन्द्र सिंह
द्वितीय वर्ष, रसायनिक अभियांत्रिकी विभाग

ज़िंदगी में अपना किरदार इतनी शिद्त से निभाना कि पर्दा गिरने के बाद भी तालियाँ बजती रहें।

प्रकाशक एवं **सम्पादक आचार्य डॉ. ज्योति जोशी**, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 9413971604, ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com
सदस्य, सम्पादक मंडल : अशोक अग्रवाल एवं अंशु सक्सैना
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द् प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016 • www.theprintpalace.com